समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



कक्षा - 10

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 1

नींव की ईंट

(रामवृक्ष बेनीपुरी (1902-1968))

भाग – 3

अभ्यास-माला

पल्लवी कलिता

4. सम्यक् उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में) —

(क) 'नींव की ईंट' का प्रतीकार्थ स्पष्ट करो।



4. सम्यक् उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में) —

(क) 'नींव की ईंट' का प्रतीकार्थ स्पष्ट करो।

उत्तर : 'नींव की ईंट' बेनीपुरी जी के रोचक एवं प्रेरक ललित निबंधों में से अन्यतम है। 'नींव की ईंट का प्रतीकार्थ है समाज का अनाम शहीद, जो बिना किसी यश-लोभ के समाज के नव-निर्माण हेतु आत्म-बलिदान के लिए प्रस्तुत है। निबंधकार के अनुसार भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के सैनिकगण नींव की ईंट की

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

तरह थे। जबकि स्वतंत्र भारत के शासकगण कंगूरे की ईंट निकले। भारतवर्ष के सात लाख गाँवों , हजारों शहरों और सैकड़ों कारखानों के नव-निर्माण हेतु नींव की ईंट बनने के लिए तैयार लोगों की जरूरत है। परंतु विडंबना यह है कि आज कंगूरे की ईंट बनने के लिए चारों ओर होड़ा-होड़ी मची है, नींव की ईंट बनने की कामना लुप्त हो रही है। इस रूप में भारतीय समाज का नव निर्माण संभव नहीं। इसलिए निबंधकार ने देश के नौजवानों से आह्वान किया है कि वे नींव की ईंट बनने की कामना लेकर आगे आएँ और भारतीय समाज के नव-निर्माण में चुपचाप अपने को खपा दें।

(ख) 'कंगूरे की ईट' के प्रतीकार्थ पर सम्यक् प्रकाश डालो।



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ख) 'कंगूरे की ईट' के प्रतीकार्थ पर सम्यक् प्रकाश डालो।

उत्तर : कंगूरे की ईट का अर्थ है समाज का यश-लोभी सेवक। साधारणतः मनुष्य बिना परिश्रम तथा चुपचाप मरने के बजाय यश लाभ करना चाहते हैं । इसी कारण स्वतंत्रता के बाद कुछ लोगों ने यश, पद तथा धन के लिए होड़ा-होड़ी में लग गये और बाद में इस पर अधिक आकर्षित होकर देश के लिए कोई काम करना नहीं चाहा । कंगूरे की ईट समाज के ऊँचे पदों के काम करके यश कमाने वाले लोगों को प्रतिनिधित्व करता हैं।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

लेखक इससे उजागर करना चाहते हैं कि समाज की मजबूती के लिए मौन बलिदान देने वाले से अधिक सम्मान ऊँचे पद पर सुशोभित लोगों को मिलता है। हमें चाहिए कि समाज के नव निर्माण के लिए मौन रूप से बलिदान करने वालों को प्रोत्साहन दें और उन्हीं का योगदान भी करें। कंगूरे वालों का नहीं।

(ग) 'हाँ, शहादत और मौन-मूक ! समाज की आधारशिला यही होती है'-का आशय बताओ।



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca Foundation

(ग) 'हाँ, शहादत और मौन-मूक ! समाज की आधारशिला यही होती है'-का आशय बताओ।

उत्तर : शहादत और मौन मूक को ही समाज की आधारशिला माना जाता है। क्योंकि इसी से ही समाज का निर्माण होता है। यदि समाज में चुपचाप काम करने वाले लोग न होते तो कोई काम नहीं हो सकता। आज भारत में हजारों शहरों और कारखानों का निर्माण हो रहा है। नया समाज निर्माण हो रहा है। कोई शासक अकेले यह नहीं कर सकता। इसके लिए चाहिए ऐसे नौजवान, जो अपने-आपको चुपचाप इस काम में सौंप दे। अतः यह स्पष्ट है कि मौन बलिदान ही समाज की वास्तविक आधारशिला हैं।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

5. सप्रसंग व्याख्या करो —

(क) "हम कठोरता से भागते हैं, भद्देपन से मुख मोड़ते हैं, इसीलिए सच से भी भागते हैं।"

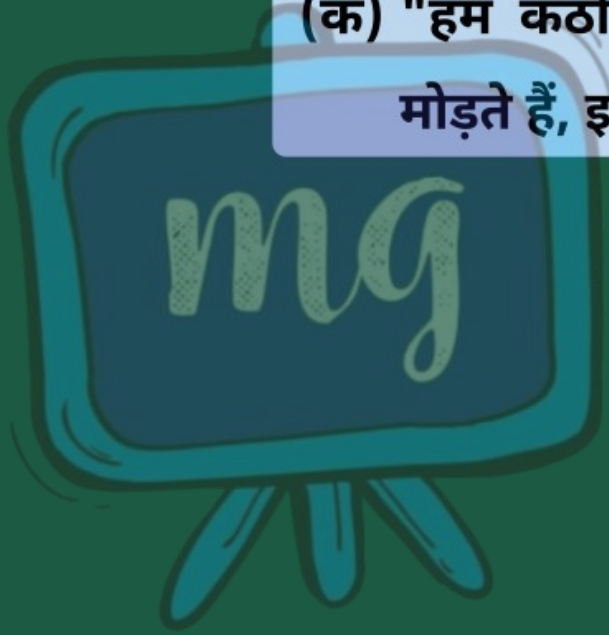

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

5. सप्रसंग व्याख्या करो —

(क) "हम कठोरता से भागते हैं, भद्देपन से मुख मोड़ते हैं, इसीलिए सच से भी भागते हैं।"

उत्तर :

प्रसंग : प्रस्तुत व्याख्या हमारे पाठ्य पुस्तक के अन्तर्गत रामवृक्ष बेनापुरी जी द्वारा रचित 'नींव की ईंट' नामक ललित निबन्ध से उपस्थापन किया गया है। यहाँ बेनीपुरी जी ने मनुष्य की प्रवृत्ति पर विश्लेषण किया है।

व्याख्या : लेखक कहते हैं कि सत्य हमेशा कठोर होता है और यह कठोरता और भद्दापन के साथ जन्मा करते हैं। कठोरता के लिए मौन बलिदान चाहिए।लोग ऐसे बलिदान से भागकर बेकार प्रशंसा की आशा करते हैं। सत्य से भागकर असत्य को आश्रय देते हैं । पाठ के अनुसार सब लोग भद्देपन से भागते हैं। इसलिए नींव की ईंट बनने से भी बचते हैं । वे चुपचाप बलिदान से बचते हैं । इसलिए हमेशा लोग सत्य से भी धीरे धीरे भागते हैं। अतः हमें सत्य के लिए कठोरता और भद्देपन को साथ देना चाहिए ।

(ख) "सुंदर सृष्टि ! सुंदर सृष्टि, हमेशा बलिदान खोजती है, बलिदान ईंट का हो या व्यक्ति का ।"



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ख) "सुंदर सृष्टि ! सुंदर सृष्टि, हमेशा बलिदान खोजती है, बलिदान ईंट का हो या व्यक्ति का ।"

उत्तर :

प्रसंग : प्रस्तुत व्याख्या हमारे पाठ्य पुस्तक के अन्तर्गत रामवृक्ष बेनापुरी जी द्वारा रचित 'नींव की ईंट' नामक ललित निबन्ध से उपस्थापन किया गया है। यहाँ बेनीपुरी जीने सुन्दर समाज के निर्माण पर विश्लेषण किया है।

व्याख्या : प्रस्तुत व्याख्या के अनुसार लेखक बेनीपुरी जी कहते हैं कि सुन्दर सृष्टि अपने आप नहीं होती हैं। इसके लिए त्याग और बलिदान जरुर लगते हैं ।

जिस प्रकार नींव की ईंट की बलिदान से दुनिया में इमारत खड़े रहते हैं, कंगूरे बनते हैं, लोग इमारतों की प्रशंसा करते हैं। लेकिन इस प्रशंसा के पीछे नींव की ईंट का बलिदान हैं । वह मिट्टी के सात हाथ नीचे जाकर गड़ जाते हैं , अपने को मौनता सा अंधकार में सौंप देता है। वह कभी प्रशंसा नहीं चाहते हैं। ठीक उसी प्रकार नये समाज के लिए कुछ लोगों को बलिदान देना चाहिए। जिस प्रकार कई लोगों के बलिदान से देश को स्वतंत्रता मिली, देश को नई सृष्टि का मौका मिला। अतः देखा जाता है कि नई सुन्दर सृष्टि के लिए बलिदान जरूर होना चाहिए, चाहे वह इमारत के लिए हो या देश-समाज के लिए हो।

(ग) "अफसोस, कंगूरा बनने के लिए चारों ओर होड़ा-होड़ी मची है, नींव की ईंट बनने की कामना लुप्त हो रही है!"

(ग) "अफसोस, कंगूरा बनने के लिए चारों ओर होड़ा-होड़ी मची है, नींव की ईंट बनने की कामना लुप्त हो रही है!"

उत्तर :

प्रसंग : प्रस्तुत व्याख्या हमारे पाठ्य पुस्तक के अन्तर्गत रामवृक्ष बेनापुरी जी द्वारा रचित 'नींव की ईंट' नामक ललित निबन्ध से उपस्थापन किया गया है। यहाँ बेनीपुरी जी ने मनुष्य की प्रवृत्ति पर विश्लेषण किया है।

व्याख्या : यहाँ लेखक बेनीपुरी जी कहते हैं कि आज लोग इमारत के कंगूरे बनने के लिए चारों ओर होड़ा-होड़ी मचाने लगे हैं । क्योंकि लोग आज सत्य से भागते हैं। कंगूरा बनने में बलिदान का, त्याग का, कठोरता का कोई जरुरत नहीं होता। इसलिए कंगूरा बनने के लिए लोग हल-चल मचाने लगते हैं। लेकिन कंगूरे से दुनिया में नई सृष्टि नहीं मिलती, सृष्टि तो नींव से ही सम्भव है। लोग नींव होने के बजाय कंगूरा बनने जा रहे हैं । जिससे समाज नहीं बन सकते। यह बड़े अफसोस की बात है। यह भविष्य के लिए बड़ी भयानक चिंता हैं।

भाषा एवं व्याकरण-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों में से अरबी-फारसी के शब्दों का चयन करो —

इमारत,	नींव,	दुनिया,	शिवम्,
जमीन,	कंगूरा,	मुनहसिर,	अस्तित्व,
शहादत,	कलश,	आवरण,	रोशनी,
बलिदान,	शासक,	आजाद,	अफसोस,
शोहरत			

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

उत्तर :

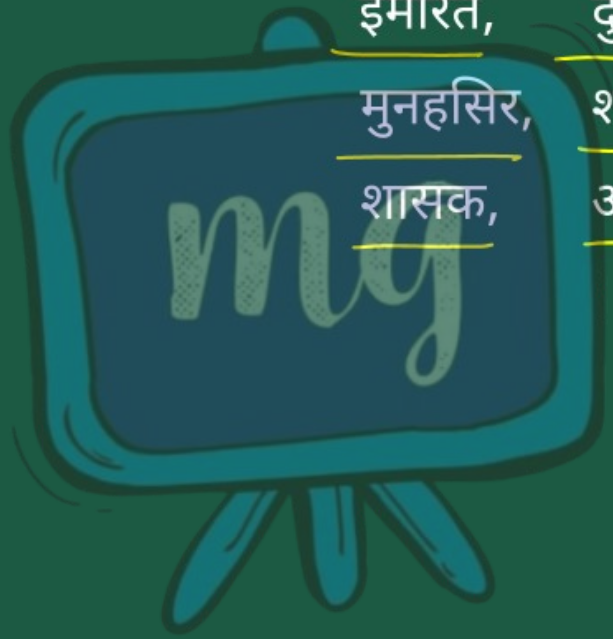

इमारत,	दुनिया,	जमीन,	कंगूरा,
मुनहसिर,	शहादत,	कलश,	रोशनी,
शासक,	आजाद,	अफसोस,	शोहरत

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

2. निम्नांकित शब्दों का प्रयोग करके वाक्य बनाओ—

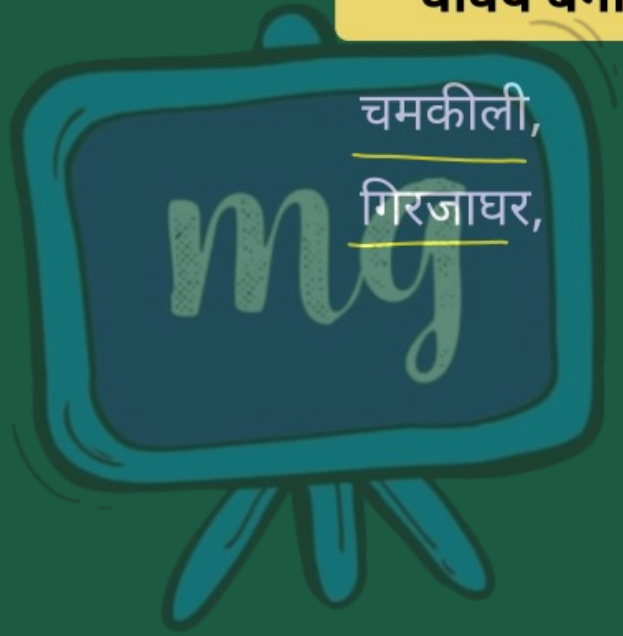

चमकीली, कठोरता, बेतहाशा, भयानक, गिरजाघर, इतिहास

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

उत्तर :

चमकीली :- आसमान में चमकीली तारे बहुत ही सुंदर लग रहे थे।

कठोरता :- रोहन ने अपने काम में इतनी कठोरता दिखाई कि सब लोग उसकी प्रशंसा करने लगे।

बेतहाशा :- बारिश इतनी बेतहाशा हुई कि सड़कें पानी से भर गईं।

भयानक :- भूकंप के बाद का दृश्य बहुत भयानक था।

गिरजाघर :- ईसाई धर्म के लोग गिरजाघर में प्रार्थना करते हैं |

इतिहास :- भारत का इतिहास बहुत गौरवशाली है।

3. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो —

(क) नहीं तो, हम इमारत की गीत नींव की गीत से प्रारंभ करते।

(ख) ईसाई धर्म उन्हीं के पुण्य-प्रताप से फल-फूल रहे हैं।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

3. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो —

उत्तर :

(क) नहीं तो, हम इमारत की गीत नींव की गीत से प्रारंभ करते।

नहीं तो, हम इमारत के गीत नींव की गीत से प्रारंभ करते।

(ख) ईसाई धर्म उन्हीं के पुण्य-प्रताप से फल-फूल रहे हैं।

ईसाई धर्म उन्हीं की पुण्य-प्रताप से फल-फूल रहे हैं ।

(ग) सदियों के बाद नए समाज की सृष्टि की ओर हम पहला कदम बढ़ाए हैं।

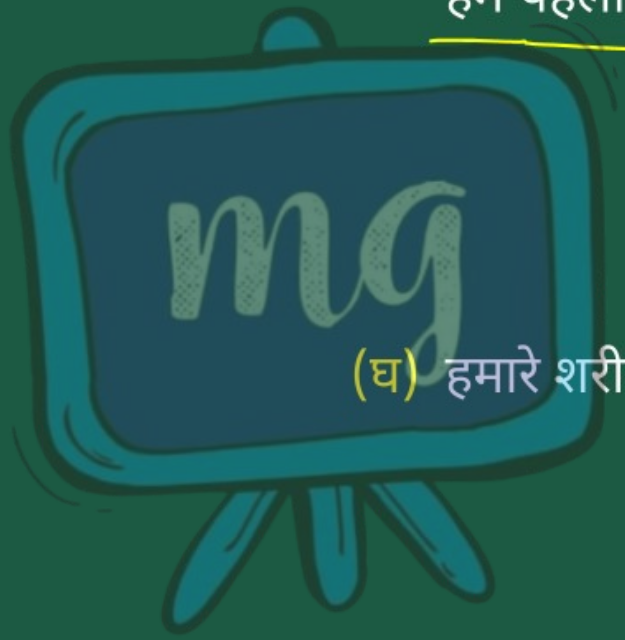

(घ) हमारे शरीर पर कई अंग होते हैं।

(ग) सदियों के बाद नए समाज की सृष्टि की ओर हम पहला कदम बढ़ाए हैं।

सदियों के बाद नए समाज की सृष्टि की ओर हमने पहला कदम बढ़ाया हैं।

(घ) हमारे शरीर पर कई अंग होते हैं।

हमारे शरीर में कई अंग होते हैं।

(ङ) हम निम्नलिखित रूपनगर के निवासी प्रार्थना करते हैं।



(च) सब ताजमहल की सौंदर्यता पर मोहित होते हैं।

(ङ) हम निम्नलिखित रूपनगर के निवासी प्रार्थना करते हैं।

हम रूपनगर के निवासी निम्नलिखित प्रार्थना करते हैं।

(च) सब ताजमहल की सौंदर्यता पर मोहित होते हैं।

सब ताजमहल की सुंदरता पर मोहित होते हैं।

(छ) गत रविवार को वह मुंबई जाएगा।



(ज) आप कृपया हमारे घर आने की कृपा करें।

(छ) गत रविवार को वह मुंबई जाएगा।

गत रविवार को वह मुंबई गया था ।



(ज) आप कृपया हमारे घर आने की कृपा करें।

आप हमारे घर आने की कृपा करें।

(झ) हमें अभी बहुत बातें सीखना है।



(ञ) मुझे यह निबंध पढ़कर आनंद का आभास हुआ।

(झ) हमें अभी बहुत बातें सीखना है।

हमें अभी बहुत बातें सीखनी है।

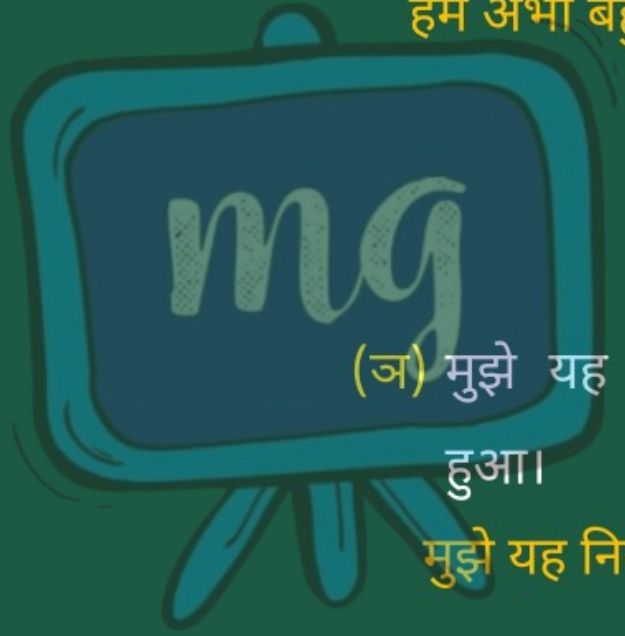

(ञ) मुझे यह निबंध पढ़कर आनंद का आभास हुआ।

मुझे यह निबंध पढ़कर आनंद मिला ।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

4. निम्नलिखित लोकोक्तियों का भाव-पल्लवन करो :

(क) अधजल गगरी छलकत जाए।

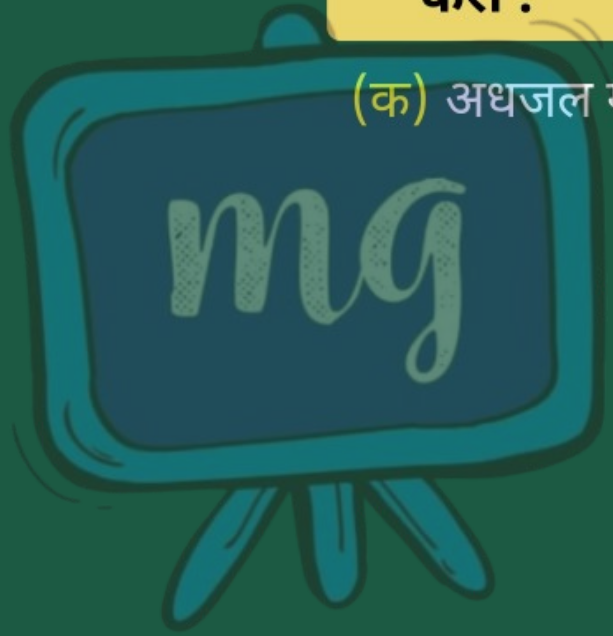

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

4. निम्नलिखित लोकोक्तियों का भाव-पल्लवन करो :

(क) अधजल गगरी छलकत जाए।

उत्तर : कम गुण या ज्ञान वाला व्यक्ति ज़्यादा दिखावा करता है ।

यह लोकोक्ति उन लोगों पर लागू होती है जो अपने सीमित ज्ञान या योग्यता के बावजूद बहुत ज्यादा बोलते हैं या खुद को ज्ञानी दिखाते हैं।

(ख) होनहार बिरबान के होत चिकने पात।



(ख) होनहार बिरबान के होत चिकने पात।

उत्तर : किसी भी प्रतिभाशाली व्यक्ति के लक्षण बचपन से ही दिखाई देने लगते हैं।

➤ जिस तरह एक पौधा अगर आगे चलकर बड़ा वृक्ष बनता है, तो उसके पहले पत्ते के चिकने और स्वस्थ होने से ही पता चलता है, उसी तरह एक होनहार बच्चे के गुण और क्षमताएं भी उसके बचपन से ही दिखाई देने लगते हैं।

(ग) अब पछताए क्या होत जब चिड़िया चुग गई खेत।



(ग) अब पछताए क्या होत जब चिड़िया चुग गई खेत।

उत्तर : इस लोकोक्ति का अर्थ है कि समय बीत जाने के बाद या कोई नुक़सान हो जाने के । बाद पश्चाताप करने का कोई लाभ नहीं होता यह कहावत आलसी और भाग्य के भरोसे रहने वाले लोगों के साथ मेल खाती है।

(घ) जाको राखे साइयाँ मार सके न कोय।



(घ) जाको राखे साइयाँ मार सके न कोय।

उत्तर: इस लोकोक्ति का अर्थ है कि जिसकी रक्षा ईश्वर स्वयम् करते हैं, उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता।



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

5. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो अर्थ बताओ :

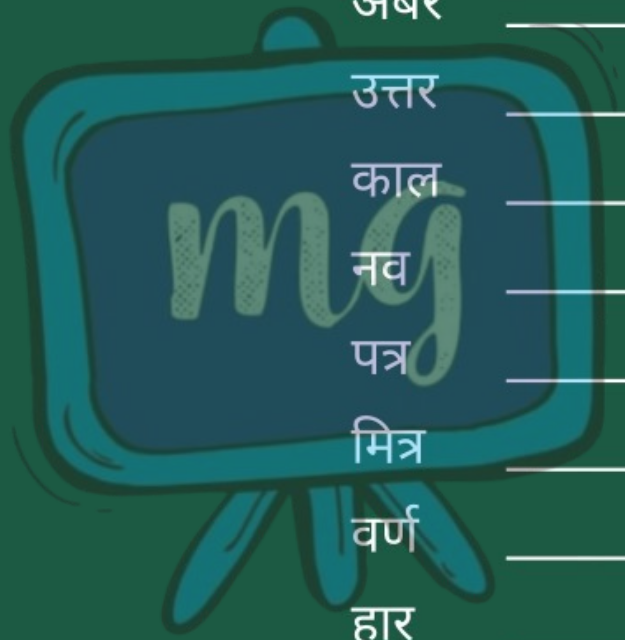

अंबर	_____	_____
उत्तर	_____	_____
काल	_____	_____
नव	_____	_____
पत्र	_____	_____
मित्र	_____	_____
वर्ण	_____	_____
हार	_____	_____
कल	_____	_____
कनक	_____	_____

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

उत्तर :

अंबर	आसमान , वस्त्र
उत्तर	जवाब, दिशा
काल	समय , मृत्यु
नव	नवीन, नौ
पत्र	चिट्ठी, पत्ता
मित्र	दोस्त, सखा
वर्ण	अक्षर, रंग
हार	पराजय, माला
कल	गुजरा हुआ दिन, मधुर ध्वनि
कनक	सोना, धतूरा

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

6. निम्नांकित शब्द-जोड़ों के अर्थ का अंतर बताओ —

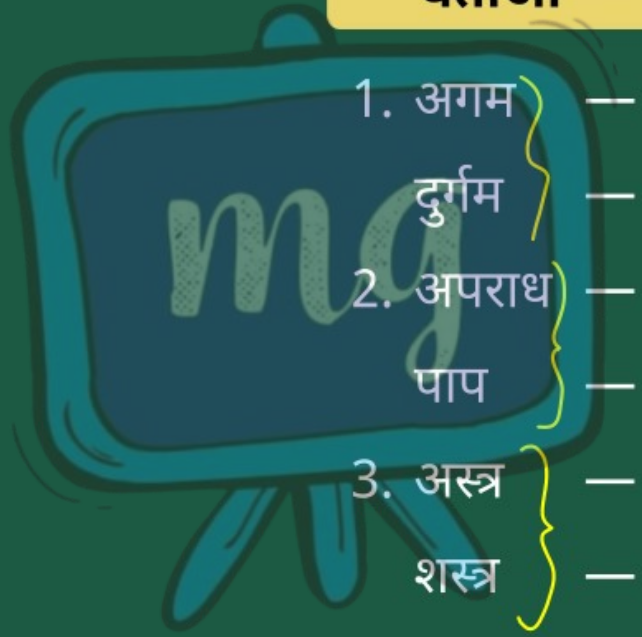

1. अगम —
   दुर्गम —
2. अपराध —
   पाप —
3. अस्त्र —
   शस्त्र —

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

6. निम्नांकित शब्द-जोड़ों के अर्थ का अंतर बताओ —

उत्तर :

1. अगम — न जाने योग्य
   दुर्गम — जहाँ पहुँचना कठिन हो
2. अपराध — दोष
   पाप — दुष्कर्म
3. अस्त्र — फेंक कर चलाए जाने वाला हथियार
   शस्त्र — हाथ से पकड़ कर चलाया जाने वाला हथियार

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

4. आधि —

व्याधि —

5. दुख —

खेद —

6. स्त्री —

पत्नी —

7. आज्ञा —

अनुमति —

8. अहंकार —

गर्व —

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

उत्तर :

4. आधि — मानसिक पीड़ा
   व्याधि — बीमारी
5. दुख — कष्ट
   खेद — अफ़सोस
6. स्त्री — महिला
   पत्नी — अर्धांगिनी
7. आज्ञा — आदेश
   अनुमति — स्वीकृति
8. अहंकार — घमंड
   गर्व — अभिमान

